M.A. II semester, Political science
Paper course III 'Contemporary Political Theory'
Code – LT-2072

Syllabus

1. Setting the Context: Decline of political Theory, revival of Political Theory, End of Ideology Debate
2. Approaches: Behavioural, Post Behavioural, Post Modernist
3. Discourses of Justice: John Rawls, Robert Nozick, Amartya Sen
4. Debates and Discourses: Communitarianism, Multiculturalism, Environmentalism
5. Debates and Discourses: Feminism, Orientalism, Existentialism
6. Debates and Discourses, Constructivism, Egalitarianism, New Humanism

M.A. II Sem. Political Science

Paper Course III 'Contemporary Political Theory'

Code No- 51-2072

Chapter II- Approaches: Behavioural Approach

Prepared by
(Dr. Madhu Bala Gupta)

व्यवहारवादी पद्धति

वर्तमान में व्यवहारवाद राजनीति विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण धारणा के रूप में परम्परागत पद्धतियों के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद राजनीति विज्ञान में एक ऐसी विचारधारा की आवश्यकता अनुभव हुई जो अधिक व्यावहारिक एवं वास्तविक हो तथा जिसमें कल्पनाओं और मूल्यों का कोई स्थान एवं महत्त्व न हो तथा जिसमें राजनीतिक समस्याओं का समाधान व्यावहारिक आधार पर हो। इसी विचार के आधार पर व्यवहारवाद का जन्म हुआ। व्यवहारवाद में राजनीतिक घटनाओं, संस्थाओं, संविधानों आदि के अध्ययन करने की अपेक्षा व्यक्तियों अथवा समूहों के व्यवहार का अध्ययन अधिक उपयोगी समझा जाता है।

डेविड ईस्टन को व्यवहारवाद का जनक कहा जाता है। रॉबर्ट डहल ने व्यवहारवाद को परम्परावादी पद्धति के विरुद्ध एक आन्दोलन की संज्ञा दी है। ग्राहम वालास ने 1908 में 'Human Nature in Politics' में तथा चार्ल्स मेरियम ने 1925 में अपनी पुस्तक 'New Aspects of Politics' में औपचारिक अध्ययन के स्थान पर व्यवहारवादी एवं वैज्ञानिक अध्ययन पर जोर दिया।

व्यवहारवाद की विशेषताएं एवं सिद्धान्त :-

1. व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन
2. अनुभवात्मक एवं क्रियात्मक दृष्टिकोण पर बल
3. मूल्य निरपेक्ष अध्ययन पर बल
4. निष्कर्षों में अस्थिरता
5. मानव के व्यवहार से सम्बन्धित तथ्यों का वैज्ञानिकता तथा सर्वेक्षण, निरीक्षण एव परीक्षण पर बल
6. संस्थाओं, संविधानों एवं सरकारों के अध्ययन का महत्व न होना
7. अन्तर शास्त्रीय अध्ययन (Inter-disciplinary studies) पर जोर
8. व्यक्ति और समूहों के व्यवहार में एकरूपता

डेविड ईस्टन जिसे व्यवहारवाद का जनक कहा जाता है, ने अपने लेख 'The current meaning of Behaviouralism' में व्यवहारवाद की निम्न विशेषताएं बताई हैं—

1. नियमन ~~(Verification)~~ (Regularities)
2. सत्यापन (Verification)
3. तकनीकी प्रयोग (Use of Techniques)
4. परिमाणीकरण (Quantification)
5. मूल्य निर्धारण (Value Determination)
6. व्यवस्थाबद्धीकरण (Systematization)
7. विशुद्ध विज्ञान (Pure Science)

अतः व्यवहारवाद राजनीतिक तथ्यों की व्याख्या और विश्लेषण का एक ऐसा उपागम है जिसमें व्यक्ति के राजनीतिक व्यवहार को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। इसमें तथ्यों का प्रयोग राजनीतिक व्यवहार को अनुभव करने में सहायता देता है। यह दृष्टिकोण परम्परावादी पद्धति के बिल्कुल विपरीत है।

आलोचना:-

अनेक विद्वानों द्वारा व्यवहारवाद की अनेक आधारों पर आलोचना की जाती है। रसेल, कुबाक आदि अनेक विचारकों का मानना है कि मानव व्यवहार की जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यवहारवाद को विज्ञान के रूप में प्रतिपादित नहीं किया जा सकता।

1. प्राकृतिक विज्ञानों एवं राजनीतिक विज्ञान को एक स्तर पर रखा नहीं किया जा सकता।
2. मूल्य-निरपेक्षता सम्भव नहीं है।
3. व्यवहारवादी आँकड़ों को एकत्र करने में इतना अधिक उलझ जाते हैं कि महत्वपूर्ण तथ्यों की उपेक्षा हो जाती है।
4. तकनीकों पर अधिक बल देने से विषय-वस्तु पीछे रह जाती है।
5. व्यवहारवादी अन्य पद्धतियों को महत्व नहीं देते।
6. अत्याधिक खर्चीली पद्धति है।

7. व्यवहारवादियों के विचारों में एकता का अभाव है।
8. संख्यात्मक पद्धति से मानवीय स्वभाव का मापन सम्भव नहीं।
9. इस दृष्टिकोण में विरोधाभास भी है। एक ओर व्यवहारवादी अन्तर-शास्त्रीय अध्ययन पर जोर देते हैं जबकि दूसरी ओर राजनीति विज्ञान को एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त समस्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि यद्यपि व्यवहारवाद ने राजनीति विज्ञान को एकता और आधुनिकता प्रदान की है लेकिन इसकी अपनी सीमाएं हैं। व्यवहारवाद के प्रयोगों की इकाई मानव है जो परिवर्तनशील प्रकृति का होता है। परिवर्तनशील मानव पर आधारित प्रयोगों व निष्कर्षों का बहुत अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। अतः व्यवहारवाद सीमाओं की बेड़ियों में जकड़ कर रह गया है तथा उत्तर-व्यवहारवाद के जन्म का महत्वपूर्ण कारण बना है।

इस पेपर का विस्तार से अध्ययन करने के लिए निम्न किताबों को पढ़ सकते हैं:—

1. आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त – डा० वी०भी सिंह
2. आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त - डा० श्यामलाल वर्मा
3. पाश्चात्य राजनीतिक सिद्धान्त – डा० एस०सी० सिंहल
4. आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त – डा० एस०पी० वर्मा (Hindi, English both edition)

व्यवहारवादी पद्धति से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न:

1. "व्यवहारवादी क्रान्ति परम्परागत राजनीति विज्ञान की उपलब्धियों के प्रति असन्तोष का परिणाम है जिसका उद्देश्य राजनीति विज्ञान को अधिक वैज्ञानिक बनाना है।" रोबर्ट ए० डहल
इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. व्यवहारवाद क्या है? व्यवहारवाद की विशेषताओं की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।
3. डेविड ईस्टन की व्यवहारवाद की विशेषताएं बताइये।
4. राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी उपागम के विषय-क्षेत्र एवं प्रकृति की विवेचना कीजिए।